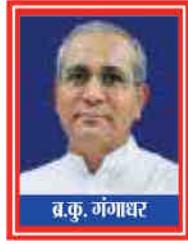


देखो... व्यर्थ हमें कहाँ ले जा रहा...!

हम कितने भाग्यशाली हैं जो संसार के 'असार कुचक्र' से छूट गये। हमने जन्म-जन्म इस कुचक्र से छूटने के न जाने कितने प्रयत्न किये, कितनी ही कोशिश की, किन्तु जितना ही उससे छूटने की कोशिश की उतना ही उस दलदल में और ही फंसते गये। न जाने हमने कितने पड़ितों-विद्वानों के आगे चबकर काटे होंगे, पर हमें असफलता ही हाथ लगी। इसका मतलब ये था कि जिस पर हमारी आस्था थी वे स्वयं ही इससे मुक्त नहीं थे। तो भला वे हमें कैसे मुक्त कर पाते! आज की एडवांस जनरेशन में इससे छूटने के लिए कई पॉज़िटिव थिंकिंग का सहारा ले रहे हैं तो कई योगासन का। पर ये सब करते हुए भी पूर्णतः सफल नहीं हो पा रहे। हमने हाल ही में देखा कि एक मशहूर एक्टर जो रोज़ योगासन करता था, जिम में जाता था, शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट भी था, फिर भी हार्ट अटैक में अपनी जान गंवा दी। प्रयास तो करते हैं सभी अपने-अपने लेवल पर, पर फिर भी जीवन में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रह ही जाती हैं। परिणामस्वरूप वे चाहते हुए भी उससे निजात नहीं पा सकते।

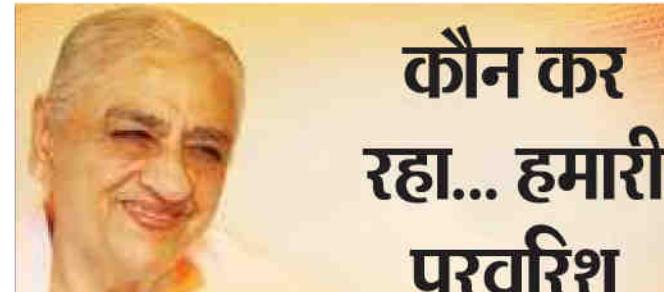


દ્ર. કૃ. ગંગાધર

पुकारा जयवा उपाय ब्राह्म है जिनसे आत्मा में घुसे हुए व्यर्थ व बुरे संस्कार बाहर निकल जाते हैं और उससे पीछा छूट जाता है। सब बातों का तो यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं, परंतु एक ऐसी बात को हम यहाँ लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है।

वो ये है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निंदा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाहें सुनकर उसे तुरंत मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, 'अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था।' हम उस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास पात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरी घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घुणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि 'अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति को फलाने से लगाव-झुकाव है! वो झूटा है, ठग है, बेर्इमान है, वो केवल बाहर का दिखावा करता है। और वो बोलने में बड़ा चालाक है। बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे से उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पथर बांध कर पानी में उतरेगा तो ढूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।' ऐसी मानसिकता वालों का हाल भला क्या होगा!

जब हमारी ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वह स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पथर इकट्ठे करने लगता है। गोया अपने ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को जिंदा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियां स्वयं चुनकर लाता है और उसकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्रिं स्वयं अपने हाथों से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। शमशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उसकी भी उसे आवश्यकता नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाजा उठाने की भी ज़रूरत नहीं। क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय ! हाय ! हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं ! जैसे कोई चंदन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर लेते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातों को सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रस्ते पर चल पड़ेंगे और ख़ुशी, आनंद तथा मित्र भाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि-वृत्ति का न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों का बोझ बढ़ता जायेगा और पाप का घड़ा भरता जायेगा तथा जीवन दलदल में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रांस हो जायेगी और जिसकी स्मृति-भ्रांस हो जाये तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लूटिया ही नहीं ढूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है। तो हे मानव ! अपने जीवन का एक बार बैठकर देखो, कहीं हमारा जीवन भी ऐसी आदतों के वश तो नहीं ! हम अपने पैर पर खुद ही तो कुलहाड़ा नहीं मार रहे ! सोचो, चिंतन करो और ऐसी आदतों की चिता को तिलांजलि दे दो।

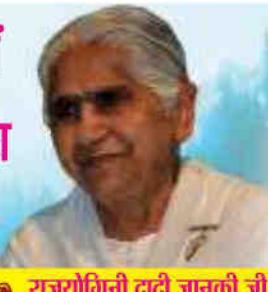


राजयोगिनी दाढ़ी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाऊँ नहीं, बातें तो होगी लेकिन बातें खुशी न ले जाएं, खुशी हमारी चीज़ है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करें। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरू से लेकर बाबा ने हमें कितने खजाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिजी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुंच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं यह कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेंकिंग करो कैं दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि-मनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखाई दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा मेरा पन लायेगे उतना खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा मेरों खो जाओ। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी दी है हमारी आज्ञा पर चलोंगे तो क्या से क्या बना दूँगा! संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। वह हमारे लिए क्या-क्या कर रहा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है।

हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बोतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे! यह भाग्य कम थोड़े ही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं, उनकी निशानी सदा खुशनसीब की होगी। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। बाकी आपस में जो थोड़ी बहुत खिटपिट होती है, यह भी पेपर समझ पास होना है। हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। हमारे पर बाबा की नजर पड़ गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ति न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ! बाबा मेरे साथ है बस यह स्मृति में रखो।

**कौन कर  
रहा... हमारी  
परवरिश**



२५ राजयोगिनी दादी जानकी जी

धीरज, मन को धीरज दो। साथ मित्रता भाव कभी न  
जल्दी अधैर्य न हो जाओ, छूटे, कुछ भी हो, मित्रता  
अधैर्यता व्यर्थ चिंतन में ले भाव में सब कछ समा लेते  
जाती है, दुःखी बनाती है। हैं। बाबा ने जैसे हरकंको

सहनशीलता, इसकी अपना मित्र माना। बात  
गहराई में जायेंगे तो सहन आती है, चली जाती हैं,  
करने की शक्ति आती है। बातों के कारण हमारे  
मुझे सहन करना पड़ता है, आपसी सम्बन्ध ठीक न  
माना दुख हुआ। शक्ल में रहें, यह मेरे लिए शान नहीं।  
थोड़ा भारीपन आयेगा, कभी गम्भीरता का गुण, यह  
आँखें गोली भी हो जायेंगी गुण हमें जानी त आत्मा बना

जाख नहीं जा हो जाकर उग हन शांति जातना करा  
तो वो सहनशीलता नहीं है। देता है। जैसे बाबा  
सभे साथ साथ लिया साथ लिया है ऐसे ही

सबक साथ हमारा मित्रा मुस्कुराता कह है, बाबा का भाव हो। मेरा कोई शत्रु नहीं मुस्कुराहट में साधारणता तो है। निंदा हमारी जो करें मित्र नहीं है ना! शब्द थोड़े, रूप हमारा सोया। जो महिमा करे बड़ा स्नेह और शक्ति वाला उसको मित्र मानो, जिसने हो, साधारण न हो।  
कुछ निंदा की, गलत बोला, दूसरा रुहनियत में

उसको शत्रु मानो, यह रमणीकता हो। कोई सीन  
लक्षण ज्ञानी तू आत्मा के ऐसी आ जाये तो सीरियस  
नहीं है। महिमा करने वाले न बन जायें। सीन देखके  
तो मुझे खुश भी कर सकते हैं, आज महिमा करेंगे कल सीरियस हो जायेंगे तो हमारे  
कुछ भी कर सकते हैं, इसलिए वो मेरे जीवन का मन का इफेक्ट तन पर भी  
आधार न हो। महिमा के आयेगा, वायुमण्डल में भी  
आधार से मैं सेवा में रहूँ, उसमें दुःख की आयेगा। वायुमण्डल को  
उनसे मेरा अच्छा सम्बन्ध सदा शांत, सच्चाई, प्रेम  
रहे... नहीं। रुहनियत है, वाला या सीरियस रूप है तो  
ईश्वरीय स्नेह है, तो वह दुःख की लेन-देन का  
बात पूरी हो जायेगी। सहनशीलता सुखी रखेगी वायुमण्डल हो जाता है। हमें  
इसलिए हमारा हरेक के वो नहीं करना है।

# स्व स्थिति को महान बनाने का साधन... ज्ञान और योग

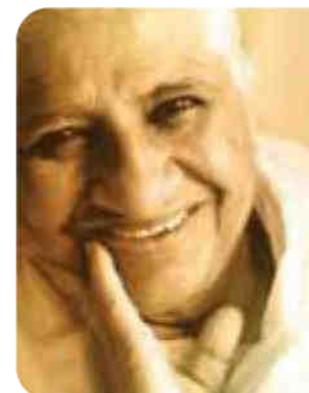


राजयोगिनी दाढ़ी प्रकाशयणि जी

एक बाप पर पूरा केथ हो, आप उनसे फेथफुल अर्थात् ईमानदार रहो। जो ईमानदार है नैचुरल उनका सिगार्ड होगा। डिसरिगाई तभी होता जब फेथफुल नहीं। जो बाबा ने मुझे आज्ञाएँ दी हैं उनको फुल पालन करना है। ऐसे नहीं दस में आठ पालन करूं, दो नहीं। बाबा की आज्ञाओं को सेन्ट परसेन्ट दिल में नोट करो फिर कोई भी सवाल नहीं रहेगा। सदा ओके बन जायेंगे। अगर मेरी स्थिति महान नहीं तो मैंने बाबा का बनक क्या पाया!

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्यूरेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सब्जेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से हर समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन के ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो कहे तुम्हे



स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्युरेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेगो। सेवा की सब्जेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा वा कि हम सो देवता हैं, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

गुरनाम

न है  
गुण  
के कठ  
मे ही  
का क  
गये  
तुम्हे

आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करना है। परन्तु बाबा ब्रह्मचर्य में रहने की सख्त श्रीमत देता, इसमें जरा भी छूट नहीं। जिस बात के लिए दुनिया एक तरफ, उसी बाप को बाबा बिल्कुल स्ट्रॉन्ग करता। इस बात में रिचक भी रहमदिल नहीं, इसमें काल होकर रहो। संस्कारों पर धर्मराज होकर रहो। जितना अपने संस्कारों पर धर्मराज बनेंगे उतना धर्म के ऊपर राज्य करेंगे। संस्कारों में जरा भी निर्बलता आयेगी तो हीन हो जायेंगे। लौकिक-अलौकिक कार्य में मस्त रहो। मस्तराम बन जाओ तो रावण आपेही पीठ कर रहेगा। अगर सोचेंगे क्या करूँ, संस्कार हैं, तो वह कमज़ोर बना देंगे। सोचना भी कमज़ोरी है। आप डोन्टकेयर हो जाओ। आयेंगे चले जायेंगे, हमें बलवान से बलवान बाबा मिला। उसने हमें सब बल दे दिये इसलिए निर्बलता की बातें सोचो ही नहीं। आप समझो हम धर्मराज के समान हैं। हम माया को मार भगाने वाले हैं।

हमें एक ही डर है सतगुर की श्रीमत के खिलाफ कोई मनमत न हो। जहाँ मनमत आई वहाँ अवज्ञा हुई, श्रीमत को पालन करने के लिए सतगुर को सदा सामने रखो। श्रीमत मिली है बच्चे अमृतवेले उठना है, अन्न की परहेज रखनी है, संगदोष में नहीं आना है। रोज पढ़ाई पढ़नी है, यह सब सतगुर ने श्रीमत दी। एक कहावत है जिनके सिर पर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावे। तो मुझे न कोई चिंता है, न दुःख।